भारतीय परमाणु कार्यक्रम और हिन्दी पत्रकारिता– संबंध एवं प्रभाव

डॉ. बीरेन्द्र कुमार

एम.फिल. (जे.एन.यू., नई दिल्ली), पी–एच.डी. (राजनीति विज्ञान, टी.एम.बी.यू., भागलपुर)

राजनीति विज्ञान, उच्चतर माध्यमिक शिक्षक

आर.एन. एंड पी.आर. इंटर उच्च विद्यालय, जलालाबाद, असरगंज, जिला– मुंगेर

संक्षेपिका (ABSTRACT)

समसामयिक परिस्थितियों में राजनीतिक, राजनयिक, सुरक्षा एवं विकास के समस्त आयामों के बीच आम जनमानस तक इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की पहुंच एवं 'डिजिटल इंडिया' की संकल्पना के परिप्रेक्ष्य में भारत की ऊर्जा एवं शक्ति के संदर्भ परमाणु एवं सम्बन्धित नीतियों पर समस्त विश्व की नजरें टिकी हुई है। ऐसी परिस्थिति में भारत की सुधी जनता एवं यहां निवास करने वाले सभी व्यक्तियों को भारत सरकार की सम्बन्धित कार्यनीतियों एवं कार्यक्रमों पर किसी न किसी प्रकार से ध्यानाकर्षित होना स्वभाविक है जिसमें मीडिया का योगदान सर्वोच्च है। प्रिंट मीडिया भारत सहित विश्व का सर्वाधिक प्राचीन एवं लोकप्रिय माध्यम रहा है। हिन्दी भारत की राजभाषा के साथ–साथ प्रमुख सम्पर्क भाषा है और यहां के हर राज्य, केन्द्र शासित प्रदेश सहित हर कोने–कोने में किसी न किसी रूप में हिन्दी से सरोकार रखने वाले लोग पाए जाते हैं जिसका विदेशों तक व्यापक स्तर पर विस्तार है। ऐसी परिस्थिति में भारत की परमाणु सम्बन्धी नीतिगत मामलों का हिन्दी मीडिया में व्यापक स्थान देखा गया है। भारतीय शोध शिक्षा जगत के सन्दर्भ में एक खास मान्यता यह है कि यहां के शोध कार्य डिग्रियां तक ही सीमित होती है, ऐसी परिस्थिति में हिन्दी के दैनिक अखबारों में परमाणु सम्बन्धी नीतिगत फैसले एवं गतिविधियों का अध्ययन का विचार विभिन्न दृष्टिकोणों से सारगर्भित है।

मुख्य कुंजी – भारत, पत्रकारिता, हिन्दी अखबार, परमाणु नीति, परमाणु कार्यक्रम, ऊर्जा, सैन्य आवश्यकता।

परिचयात्मक पृष्ठभूमि

भारत में पत्रकारिता की शुरूआत दो सदी पूर्व हुई थी (यादव, 2003:7) और हिन्दी पत्रकारिता का जन्म 30 मई 1826 को हुआ था (चतुर्वेदी, 1994:1)। अपने जन्म काल से भारत की आजादी प्राप्त होने तक अनेक उतार–चढ़ाव के बावजूद निरन्तर प्रगति करता रहा और इस कालखण्ड में इसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश हुकुमत और भारतीय जनमानस के संवाद प्रेषण करना रहा जो पूर्णतः हुकुमत के प्रभाव में था। परन्तु स्वतंत्र भारत में 'प्रेस की स्वतंत्रता' के कारण पत्रकारिता अर्थात् मीडिया को पूर्णतः कानूनी मान्यता मिलने के कारण एक नई संवाद क्रान्ति की परम्परा विकसित हुई जिसका उद्देश्य और क्षेत्राधिकार न केवल शासन और शासितों के बीच संवाद प्रेषण करना रहा अपितु दोनों को एक–दूसरे के आधार स्वरूप में स्थापित करने तक की राजनीति तक विकसित हुई। परिणामतः अब मीडिया की भूमिका इस विशालतम प्रजातान्त्रिक राजव्यवस्था के तीन पम्परागत सैद्धान्तिक और राजनीतिक आधार स्तम्भों– विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपाकिा के बाद चौथे निर्णायक स्तम्भ के रूप में स्थापित हो चुका है। सूचना–प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर क्रान्ति के वर्त्तमान युग में विभिन्न भाषाई मीडिया ने भी स्वयं में आमूल–चूल परिवर्त्तन लाई है जिसमें 'हिन्दी मीडिया' विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि पिछले ढ़ेड दशक में एक ओर जहाँ विश्व में हिन्दी बोलने वाले

और प्रशंसक लोगों की संख्या में अद्वितीय वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर भारत के अन्दर हिन्दी का की जड़ें और भी मजबूत हुई है। अब हिन्दी की शुद्धिकरण की जगह इसकी व्यावहारिकता को अधिक प्रश्रय दिया जाने लगा है।

भारत की आधी से अधिक आबादी एक ओर जहाँ हिन्दी प्रदेशों में बसती है वहीं दूसरी ओर यह राजभाषा है और सबसे अधिक बोली एवं समझे जाने वाली भाषा है। इस कारण हिन्दी मीडिया अपेक्षाकृत शोध का विषय है क्योंकि इसके ही द्वारा भारत की राष्ट्रीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर आम–जनमानस जो राष्ट्रीय सरकार का साधन और साध्य है, की पहुँच और पकड़ समस्त राजनीतिक और राजनयिक गतिविधियों पर होती है।

अधिकतम परमाणु सक्षमता हासिल करना वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक राष्ट्र की प्राथमिकता सूची शामिल हो गई है जो परमाणु सम्पन्न क्षेत्रों में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत भी ऐसे क्षेत्र में शामिल है जहाँ इसके सीमावर्ती राष्ट्रीय हर संभव अपना परमाणु ज्ञान और क्षमता बढ़ा रहे हैं। शान्ति, विकास, ऊर्जा आवश्यकता और प्रतिरक्षा की हर उद्देश्य की पूर्ति हेतु परमाणु सक्षमता हासिल करना वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक एवं राजनयिक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र की नियति बन गई है। ऐसे में भारत की परमाणु नीति, उस पर मीडिया का प्रभाव और आम भारतीयों की समझदारी निश्चित रूप से भारतीय परमाणु कार्यक्रम की पृष्ठभूमि का एक मौलिक आधार स्तम्भ है।

साहित्यिक समीक्षा

प्रस्तुत शोध विषय की साहित्यिक समीक्षा मूलतः तीन संदर्भों में किया जा रहा है– 1. भारत में हिन्दी मीडिया की भूमिका एवं योगदान, 2. भारत की प्रतिरक्षा एवं विकास में परमाणु सक्षमता अर्थात् परमाणु नीति एवं कार्यक्रमों का प्रभाव और 3. भारत के परमाणु कार्यक्रमों पर पिछले दो दशकों में हिन्दी मीडिया का प्रभाव।

नटराजन, जे. (2017): पुस्तक के नाम के अनुरूप लेखक ने मीडिया के उत्थान और विकास का अध्ययन इक्कीस काल–खण्डों में क्रमानुसार किया है। सम्पूर्णता में इन काल–खण्डों का वर्गीकरण तीन आधार– 1. सामाजिक स्तर पर सूचना–संप्रेषण की आवश्यकता, 2. व्यक्तिगत योगदान और 3. राजनीतिक–प्रशासनिक प्रभाव के संदर्भ में किया गया है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि लेखक ने भारतीय मीडिया की विकास यात्रा का बिल्कुल ही सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन किया है।

राजकिशोर (2005): 'पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य' नामक इस पुस्तक में लेखक ने भारतीय संघ की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता अर्थात् मीडिया जिसका केन्द्र बिन्दु "हिन्दी" है की प्रकृति, कार्यक्षेत्र और संभावनाओं पर अपने अनुभवों को रेखांकित किया है। इसमें लेखक की पहली अवधारणा यह है कि 'मीडिया' द्वारा प्रत्येक समाजिक व्यवस्था की जाँच की जाती है परन्तु मीडिया की परिपक्वता और गुणवत्ता के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जाते हैं। देश के संरचनात्मक विकास के लिए भारत की स्वतंत्र राजनीतिक व्यवस्था ने अपने प्रारंभिक दिनों में जितनी उत्कंठाएं जागृत की थी उससे अधिक का आज दमन किया गया है। गरीबी–भूखमरी, वित्तीय–औद्योगिकी, प्रतिरक्षात्मक–हिंसात्मक आदि समस्याओं जो ब्रिटिश काल में मौजूद था, का निदान अभी तक नहीं हो सका है। यद्धपि इसकी प्रकृति में आमूल–चूल परिवर्त्तन हुआ है परन्तु समस्याओं का समाधान नहीं हो सका है जिसके लिए एक नई क्रान्ति की आवश्यकता है जो भारतीय मीडिया और हिन्दी मीडिया द्वारा ही सुनियोजित तरीके से संचाति की जा सकती है जो ग्लोबल और अंग्रेजी मीडिया की 'अनुवाद पत्रकारिता' के समतुल्य अपना स्थान बना चुकी है।

इस कारण सामाजिक यथार्थ और भावनात्मक संवाद की स्वतंत्र पत्रकारिता की जगह व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसलिए राष्ट्रीय महत्त्व के संवाद के परिणाम सार्वजनिक नहीं अपितु विशिष्ठ अभिजनों द्वारा निर्धारित किए जाते हैं।

लेखक की दूसरी अवधारणा यह है कि तमाम नकारात्मक पहलुओं के बावजूद मीडिया द्वारा ही राजनीतिक और राजनयिक यथार्थ को उद्घाटित किया जा रहा है जिसके आधार पर हम सम्बन्धित विषयों के यथार्थ का पुनर्सृजन कर सकते हैं। अतः निष्कर्स स्वरूप हम यह कह सकते हैं कि यह पुस्तक भारतीय संदर्भ में मीडिया की निवर्त्तमान कार्य–शैली और प्रकृति का अवधारणात्मक अध्ययन कराती है।

यादव, चन्द्रदेव (2003): हिन्दी में हिन्दी पत्रकारिता करने की विधि परखी गई महत्वपूर्ण पुस्तकों में से यह एक है। लेखक ने एक सफल पत्रकार में पत्रकारिता के लिए सभी आवश्यक बिन्दुओं का बिल्कुल सहज भाषा में सूक्ष्मता और पारदर्शितापूर्वक विश्लेषण किया है।

किरन, आर. एन. (2000): वर्त्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संचार और पत्रकारिता विषय परखी गई इस पुस्तक में मीडिया तंत्र की सम्पूर्ण अवधारणात्मक और प्रकार्यात्मक तत्वों का विश्लेषण किया गया है। पुस्तक के अध्ययन से लेखिका की यह अवधारणा स्पष्ट होती है कि वर्त्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में मीडिया और मानवीय मूल्य दोनों एक दूसरे के अनुपूरक हैं क्योंकि सामान्यतः मानवीय स्वभाव की प्रकृति अपने सामाजिक वातावरण घटित हो रहे घटनाओं और उसकी उपलब्धियों को जानने की होती है जो स्वयं वह खुद नहीं कर सकता है। मानवीय इच्छा की यह तृप्ति का एक मात्र सक्षम और परिपक्व साधन मीडिया है जो मानवीय स्वभाव की प्रकृति और प्रवृति के अनुरूप अपनी प्रवृति विकसित और संचाति करती है जिसका निर्धारण मीडिया तंत्र में शामिल व्यक्ति विशेष और सम्बन्धित घटना की प्रकृति और प्रवृति द्वारा निर्धारित होती है। मीडिया तंत्र में शामिल व्यक्ति भी मूलतः एक मानव होता है और उसमें भी सामान्य मानवीय स्वभाव नीहित होता है जो कई प्रकार के संस्कारों, पूर्वाग्रहों और समाजिक मान्यताओं का निषेचित परिणाम होता है। इस कारण मीडिया एक संरचनात्मक, गत्यात्मक और प्रकार्यात्मक अवधारणा है जिस कारण यह एक बहुआयामी विषय है और अपना स्पष्ट प्रभाव प्रत्येक राजनीतिक–सामाजिक वातावरण पर छोड़ता है।

राय, अजय के. (2009): भारत के परमाणु कार्यक्रम पर राजनयिक दृष्टिकोण से लिखी गई इस नवीनतम पुस्तक में भारत के परमाणु परीक्षण 1998, पोखरण–2 से भारत– संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच हुए बहुचर्चित परमाणु समझौते प्रकरण तक की भारतीय परमाणु राजनय और इससे उपजी नाभिकीय कार्यक्रम की संभावनाओं का अनुभव होता है। भारत की परमाणु सक्षमता और कार्यक्रम का सीधा और स्पष्ट सम्बन्ध चीन, पाकिस्तान, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस के परमाणु ऊर्जा और सामरिक नीति से जोड़ा गया है। इसके साथ ही साथ यह धारणा भी स्थापित करने का हर संभव प्रयास किया गया है कि भारत की परमाणु सक्षमता और कार्यक्रम का सीधा और स्पष्ट उद्देश्य आन्तरिक ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति करना और राष्ट्रीय विकास के मूल्यों की स्थापना की गारंटी प्रदान करना है। यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि भारत एक जिम्मेदार परमाणु सम्पन्न देश का दर्जा पा चुका है जो खतरनाक परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों द्वारा किलाबन्द किया जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में इसकी परमाणु सक्षमता एवं कार्यक्रम की कूटनीति का अध्ययन निःसंदेह अतिमहत्वपूर्ण हो गया है जिसके अद्यतन जानकारी के लिए शोधार्थियों एवं सम्बन्धित जिज्ञासुओं के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है।

फ्रेय, कार्सट्न (2006): इसका मुख्य अवधारणात्मक पहलू यह है कि भारत परमाणु नीति के मामले में आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस सवाल से घिरा हुआ है कि यह सामरिक कारणों से परमाणु विकास कर रहा है। इसके परमाणु कार्यक्रम अत्यधिक गत्यात्मक और क्लासिकल राजनीतिक प्रतिमान के प्रभाव में है। यहाँ भारतीय परमाणु नीति की व्याख्या पारदर्शितापूर्ण और विश्लेषणात्मक स्वरूप में की गई है। इसके अन्तर्गत आन्तरिक राजनीतिक गतिविधि की महत्वपूर्ण भूमिका सहित विभिन्न अभिजन वर्गों और हित समूहों के निर्णायक योगदान को भी रेखांकित किया गया है। भारतीय जन–मानस के पूर्वाग्रहों के प्रभाव में भारतीय परमाणु कार्यक्रम संचालित और निर्धारित होते हैं जिसका सबसे अधिक प्रभाव पश्चिमी देशों के पारस्परिक वैदेशिक सम्बन्धों पर पड़ता है। यहाँ पश्चिमी देशों का तात्पर्य विकसित, पूंजीवादी, परमाणु सम्पन्न और भारत को अपने प्रभाव में रखने की प्रवृति वाले राष्ट्रों से है। अतएव स्पष्ट है कि इसमें प्रतीकात्मक रूप में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सामरिक और राजनीतिक प्रतियोगिता को भी निरूपित किया गया है जो भारत की परमाणु नीति को विशेष रूप से आकर्षण का केन्द्र बनाती है।

तार्किक आधार एवं अध्ययन–क्षेत्र

भारत की परमाणु सक्षमता के संदर्भ में शोध अध्ययन का यह जो विषय चुना गया है उसका पहला तार्किक आधार यह है कि वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक राष्ट्र की प्रतिरक्षा एवं विकास उसकी परमाणु दक्षता, सम्पन्नता का द्योत्तक है। दूसरा, विश्व की विशालतम प्रजातान्त्रिक राष्ट्र भारत सर्वाधिक सशक्त भाषा हिन्दी एक 'सम्पर्क भाषा' के रूप स्थापित है, में 'प्रेस की स्वतंत्रता' के कारण आम जन–मानस की पहुँच राजनयिक एवं राजनीतिक कार्य–नीतियों तक होती है। इसके कारण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से राष्ट्रीय प्रतिरक्षा और विकास की नीति प्रभावित है। इसका प्रमुख कारण मीडिया विशेष रूप से हिन्दी मीडिया है जो सूचना–प्रौद्योगिकी के युग में अपेक्षाकृत अधिक विकसित हुई है। 1998 ई. के पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद विश्व राजनीति में भारत निरूसंदेह एक परमाणु सम्पन्न देश के रूप में स्थापित हुआ है परन्तु इसकी नाभिकीय अथवा परमाणु आवश्यकता न तो पर्याप्त हुई है और न ही इसके स्थायी स्रोत निर्धारित हुए हैं अपितु परमाणु प्रतिस्पर्धा की दौड़ इसकी चुनौतियाँ और भी अधिक बढ़ गई हैं। ऐसी परिस्थिति में भारत की विशालतम आबादी जिसके सूचना–प्रेषण का कार्य हिन्दी मीडिया करती है का महत्त्व विशेष रूप से उल्लेखनीय हो गया है। इस शोध कार्य का दूसरा बड़ा आधार एवं अध्ययन क्षेत्र यह है कि अब हिन्दी 'हिन्दी राष्ट्रों' के अतिरिक्त 'गैर हिन्दी राष्ट्रों में भी अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। जहाँ तक हिन्दी मीडिया का सवाल है, विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों में अपनी समाचार प्रबन्धन क्षमता स्थापित कर चुका है और 'इन्टरनेट' जो आज सूचना–प्रेषण का सर्वप्रमुख साधन माना जाता है, के क्षेत्र में भी अतितीव्र गति से जड़ जम रहा है।

इस शोध प्रबन्ध का कार्यक्षेत्र आन्तरिक स्तर पर भारतीय मतदाता, परमाणु नीति को प्रभावित करने वाली राजनीति, हिन्दी भाषी राज्यों में परमाणु नीति के प्रति जनता की जागरूकता पर मीडिया की भूमिका और योगदान विषय पर केन्द्रित होती है। दूसरी ओर बाह्य स्तर पर इस विषय पर केन्द्रित है कि हिन्दी मीडिया का भारत की परमाणु राजनय और राजनीति के संदर्भ में अन्य मीडिया यथा– ग्लोबल मीडिया, अंग्रेजी मीडिया आदि के साथ किस स्तर की प्रतिस्पर्धा कर रही है। इसके साथ ही भारत और विदेशी राष्ट्रों की हिन्दी मीडिया तन्त्रों द्वारा भारत की परमाणु सक्षमता के संदर्भ में समतुल्य कार्य किया जाता है। सम्पूर्णता में यह शोध, शोध–शीर्षक के अनुरूप भारत की परमाणु राजनय और परमाणु कार्यक्रमों पर मीडिया के हिन्दी प्रभावों पर आधारित एवं केन्द्रित है।

उद्देश्य

1. भारत के परमाणु कार्यक्रम के विकासात्मक और प्रतिरक्षात्मक पहलुओं का अध्ययन करना।
2. भारत के परमाणु कार्यक्रम पर हिन्दी के दैनिक समाचार पत्रों के प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. भारत की परमाणु नीति पर भारत की बहुसंख्यक भाषाई आबादी के प्रभाव को निरूपित करना।

शोध सम्बन्धी सवाल

1. क्या मीडिया को अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के सन्दर्भ में भाषाई आधार पर वर्गीकृत करना उचित है?
2. भारत की परमाणु सम्बन्धी नीतियों एवं कार्यक्रमों से आम जनमानस पर किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है?
3. सूचना–प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी भाषा अर्थात् हिन्दी मीडिया का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक और राजनयिक क्षेत्र में क्या महत्त्व है?
4. 'परमाणु सक्षमता' की जगह 'परमाणु राजनय या परमाणु नीति का प्रयोग क्यों नहीं किया गया?
5. इस शोध कार्य का राजनयिक अध्ययन के क्षेत्र में क्या योगदान प्रमाणित होगा?
6. इससे भारत के परमाणु विशेषज्ञ भाषाई अवरोध के कारण कहाँ तक संज्ञान ले पाएंगे?
7. क्या यह परमाणु मामले से अधिक हिन्दी मीडिया पर गया ग्रन्थ प्रमाणित नहीं होगा?

परिकल्पना

1. भारत की समस्त आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिरक्षा एवं विकास के मुद्दे परमाणु सक्षमता की स्थायित्व पर अवलम्बित हो चुकी है।
2. सन् 1998 से भारत की परमाणु क्षमता विश्व स्तर की हो चुकी है और संवेदनशील नीतियों की क्रियान्वयनता की गोपनीयता पर मीडिया का प्रभाव नहीं रहा है।
3. हिन्दी मीडिया भारत की प्रतिरक्षा और विकास के सभी मुद्दों को निर्णायक मोड़ देने की पर्याप्त क्षमता रखती है।

शोध प्रविधि

यह शोध प्रबन्ध गुणात्मक एवं मात्रात्मक मापदण्डों के अन्तर्गत सम्बद्ध ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और विश्लेणात्मक ढ़ाँचे पर आधारित होगा। इसके प्राथमिक एवं द्वितीयक संदर्भ स्रोत भारत की आण्विक प्रतिष्ठानों, ऊर्जा एवं तकनीक विभागों, सूचना–प्रसारण मंत्रालय, प्रतिरक्षा एवं विकास से सम्बद्ध मंत्रालय एवं विभागों, गृह एवं विदेश मंत्रालय तथा विभिन्न मीडिया इकाईयों से संग्रह किया जाएगा। उपलब्ध और संग्रह की गई अभिलेखों की अद्यतन जानकारी बनाए रखने के लिए सम्बद्ध विभाग से जोड़ा जाएगा। पत्रकारिता के सन्दर्भ में पत्रकारिता के सन्दर्भ में ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन (ABC) से भारत के प्रत्येक राज्यों से प्रमुख दो प्रमुख हिन्दी दैनिक अखबारों की सूची का संकलन किया जाएगा और जिस राज्य में एक ही अखबार पाए जाएंगे वहां से केवल उसी अखबार को लिया जाएगा। इन अखबारों में से केवल तीन पृष्ठों का संकलन किया जाएगा जिसमें प्रथम, सम्पादकीय सह स्तम्भ एवं देश–विदेश की खबरों वाले पृष्ठ होंगे। अखबारों के इन पन्नों का संकलन अब इन्टरनेट के माध्यम से अतिसुगम हो गया है। इसके बावजूद जिसका संकलन संभव न हो सकेगा उसके लिए सम्बन्धित विशेषज्ञों, कार्यालयों एवं कुछेक उत्कृष्ठ पुस्तकालयों का सहारा लिया जाएगा।

अध्यायीकरण

सम्बन्धित शोध प्रबन्ध कार्य के विभिन्न पाठों का संभावित पाठ–योजना निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है –

1. **परिचय –** यह अध्याय शोध प्रबन्ध कार्य का प्रस्तावना स्वरूप होगा। इसके अन्तर्गत भारत की परमाणु आवश्यकता, सक्षमता एवं नीतियों का प्रतिरक्षा और विकास के सन्दर्भ में संक्षिप्त अध्ययन किया जाएगा। तत्पश्चात् हिन्दी मीडिया के प्रभाव का संक्षिप्त उल्लेख किया जाएगा।
2. **प्रतिरक्षा का अवधारणात्मक अध्ययन –** इसके अन्तर्गत भारत की प्रतिरक्षात्मक पहलुओं का वर्त्तमान राजनीतिक और राजनयिक सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।
3. **विकास का अवधारणात्मक अध्ययन –** इस अध्याय में भारत के विकास के लिए उत्तरदायी तत्वों का परमाणु स्रोतों की महत्ता के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।
4. **मीडिया की भूमिका एवं योगदान –** शीर्षक के अनुरूप इस अध्याय में मीडिया की कार्य और क्षेत्राधिकार का राजनीतिक और राजनयिक संदर्भ में अध्ययन किया जाएगा। जो भारतीय संघ की राजनीति एवं इसकी अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों, खासकर परमाणु नीति पर केन्द्रित होगा इसके अतिरिक्त इसके वर्गीकरण विशेष रूप से भाषाई आधार पर, का अध्ययन किया जाएगा जिसका केन्द्र बिन्दु हिन्दी मीडिया होगा।
5. **भारत की परमाणु सक्षमता –** इस अध्याय में विश्व राजनीति, राष्ट्रीय राजनीति और राष्ट्रीय हित के संदर्भ में भारत की परमाणु सक्षमता का अवधारणात्मक और प्रकार्यात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।
6. **भारत के परमाणु कार्यक्रम –** इस अध्याय में 1998 ई. से अब तक भारत के परमाणु कार्यप्रणायिों का सैद्धान्तिक अध्ययन किया जाएगा।
7. **भारत की परमाणु सक्षमता पर हिन्दी मीडिया का प्रभाव –** यह प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अध्याय होगा जिसमें भारत की परमाणु नीति, इसके उद्देश्य एवं इसकी उपलब्धियों पर हिन्दी मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण किया जाएगा।
8. **निष्कर्ष –** इस अध्याय के अन्तर्गत सम्पूर्ण शोध अध्ययन–कार्य का मूल्यांकन किया जाएगा।

<u>उपसंहार</u>

हिन्दी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ प्रधान सम्पर्क भाषा है और समस्त भारत में हिन्दी भाषी अथवा हिन्दी पढ़ने वाले लोग मिलते हैं। सूचना–प्रोद्योगिकी एवं प्रत्येक हाथ में इन्टरनेट की उपलब्धता और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रचलन में यद्दपि प्रिंट मीडिया पिछड़ता सा नजर आ रहा है तथापि अखबारों की दुनिया में हिन्दी अखबारों की संख्या एवं लोकप्रियता कम नहीं हुई है। ऐसी परिस्थिति में जब आम जन–मानस पिछले तीन–चार दशक से परमाणु, राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपेक्षाकृत अधिक रूची रखने लगी है तो हिन्दी पत्रकारिता का महत्व भारत की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सरोकार के संदर्भ में विशेष स्थान रखने लगा है। यद्दपि यह बात भी सारश्वत सत्य है कि देश के नीति–निर्धारण विशेष रूप से परमाणु जैसे गूढ़ मसले पर कोई भी निर्णायक विचार–विमर्श अंग्रेजी भाषा में लिए जाते हैं तथापि हिन्दी अथवा अन्य भाषाओं में इसका व्यापक प्रचार–प्रसार होता है। इसलिए बहुसंख्यक जनमानस और उसकी सूचना माध्यम के लिए हिन्दी मीडिया की प्रासंगिकता अद्वितीय है जिसकी गंभीरता एवं गुणवत्तापूर्ण व्यापक शोध कार्य की गरिमा के लिए ऐसे दुर्लभ विषय आवश्यक हैं। अतः प्रत्येक भारत के राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में इस शोध कार्य के माध्यम से इस बात का सर्वे करना सम्बन्धित विषय का उद्देश्य है कि परमाणु कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को हिन्दी अखबारों द्वारा किस सीमा तक महत्त्व दिया जा रहा है।

सन्दर्भ स्रोत

A. समीक्षित स्रोत

1. राजकिशोर (2005): *पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य,* नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : द्वितीय.
2. यादव, चन्द्रदेव (2003): *हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संचार,* नई दिल्ली : ग्रन्थलोक.
3. Frey, Karsten (2006): *India's nuclear bomb and national security*, New York: Routledge Taylor & Francis Group.
4. Kiran, R. N. (2000): *Philosophies of Communication and Media Ethics: Theory, Concepts and Emperical Issues*, New Delhi: B.R. Publishing Corporation.
5. Natrajan, J. (1955): *History of Indian Journalism*, New Delhi: Publicatioon Division, Edition- 3rd, reprint: 2017.
6. Rai, Ajay K. (2009): *India's Nuclear Diplomacy after Pokhran II*, New Delhi: Har-anand Publications Pvt. Ltd.

B. अन्य स्रोत

1. दीक्षित, जे.एन. (2004) : *भारतीय विदेश नीति,* नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
2. जैन, पवन कुमार (1993) : *विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता,* नई दिल्लीः मानस पब्लिकेशन्स.
3. शर्मा, कुमुद (2003) : *भूमण्डलीकरण और मीडिया,* नई दिल्ली : ग्रन्थ अकादमी.
4. चतुर्वेदी, जे.पी (1994): *हिन्दी पत्रकारिता के कीर्तिमान,* इलाहाबाद : साहित्य संगम.
5. Bajpai, Kanti P. (ets.) (2001): *Kargil and after: Challenges for Indian Policy*, New Delhi: Har-Anand Publications.
6. Bajpai, Kanti P. and Amitabh Mattoo (eds.) (1666): *Ssecuring India: Strategic thought and Practice*, New Delhi: Manohar Publishers and Distributors.
7. Cottle, Simon (eds.) (2003): *Media organization and production*, New Delhi: SAGE Publications Ltd.
8. Esser, Frank and Barbara Pfetsch (eds.) (2004): *Comparing Political Communication: Theories, Cases, and Challenges*, New York: Cambridge University Press.
9. Gray, Colin S. (2007): *War, Peace and International Relations: An Introduction to Strategic History*, London: Routledge Tyalor & Francis Group.
10. Gupta, Rakesh (2003): "Contemporary Threats to India's Internal Security", *Journal of Peace Studies*, 10(4): 25 - 39.
11. Kapur, Harish (2002): *Diplomacy of India: Then and Now*, New Delhi: Manas Publications.
12. Mohan, C. Raja (2006): *Impossible Allies: Nuclear India, United States and the Global Order*, New Delhi: India Research Press.
13. Morris, Adalaide and Thomas Swiss (eds.) (2006): New *Media Poetics Contexts, Technotexts, and Theories*, London: MIT Press.

14. Pant, Harsh V. (2008): *Contemporary debates in India Foreign & Security Policy*, England: Palgrave Macmillan.

15. Sen, Gautam (eds.), (2007): Impediments to National Security, Pune: National Centre of International Security and Defence Analysis, University of Pune.

16. Sondhi, M.L. (eds.) (2000): *Nuclear Weapons and India's National Security*, New Delhi: Har-Anand Publications Pvt. Ltd.

17. Tellis, Ashley J. (2001): *India's emerging nuclear posture: between recessed deterrent and ready arsenal*, Arlington: RAND.